

ये हिरसो हवस की मंडी है,
दोहा कोई आये कोई जाये,
ये तमाशा क्या है,
मैं तो समझा नही ये महफिले,
दुनिया क्या है।

ये हिरसो हवस की मंडी है,
अनमोल रतन बिक जाते है,
कागज के कड़कते नोटो पर,
दुनिया के चमन बिक जाते है,
ये हरश हवस की मंडी है,
अनमोल रतन बिक जाते है ॥

हर चीज यहां पर बिकती है,
हर चीज का सौदा होता है,
इज्जत भी बेची जाती है,
ईमान खरीदे जाते है,
ये हरश हवस की मंडी है,
अनमोल रतन बिक जाते है ॥

बिकते है मुल्लो के सजदे,
पंडित के भजन बिक जाते है,
बिकती है दुल्हन की रातें,

मुर्दों के कफन बिक जाते हैं,
ये हरश हवस की मंडी है,
अनमोल रतन बिक जाते हैं ॥

ये हिरस हवस की मंडी है,
अनमोल रतन बिक जाते हैं,
कागज के कड़कते नोटो पर,
दुनिया के चमन बिक जाते हैं,
ये हरश हवस की मंडी है,
अनमोल रतन बिक जाते हैं ॥

गायक हल्केराम जी ।
प्रेषक रामस्वरूप लववंशी
8107512367

Source: <https://www.bharattemples.com/anmol-ratan-bik-jate-hain/>



Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
<https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans>

Facebook: <https://www.facebook.com/bharattemples/>

Telegram: <https://t.me/bharattemples>

Youtube: <https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw>